

आज फूल बंगले की छबि न्यारी  
अमर पुर जीतने की भई तियारी॥

कहां राजा इन्दर की ऐसी शान है  
जैसी रसिक भूप की आन बान है  
क्योंकि रोम रोम रमी प्रीति प्यारी॥

सुर राज नन्दन बन नित बिहरे  
साई बन राज की सीम विचरे  
जहां लली लाल की चरित क्यारी॥

ध्यान में न देवपति प्रभू को पसे  
वही पार ब्रह्म साई गोद में वसे  
जाकी मधुर कथा साई जीय जियारी॥

स्वार्थ के हेतु इन्द्र हरी ध्याये  
साई नेह सिंधु सदा तत सुख समाये  
ललित लीला लाल की नित ही निहारी॥

फूल महलात साई फले और फुले  
युगल किशोर रस प्रेम में झूलें  
जै जै मैगसि चन्द्र का कहूं पुकारी॥